रशिया-मॉस्को। माउण्ट आबू से कार्यक्रम प्रबंधिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, ब्र.कु. शालिनी, ब्र.कु. श्रीनिवास, ब्र.कु. रामकृष्ण, ब्र.कु. दत्तात्रय तथा अन्य भाइयों के साथ अहमदाबाद से ब्र.कु. नेहा के रशिया पहुंचने पर वहाँ आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए मॉस्को में ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. सुधा।

ये तीनों चीज़े साथ-साथ रहनी चाहिए

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जीवन को महान बनाने के पुरुषार्थ की बात जब चलती है, तो उसमें एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि केवल सेवा नहीं, त्याग तपस्या और सेवा। अगर केवल हम सेवा में ही लग जाते हैं, त्याग की भावना हमारे में नहीं रहती और तपस्वी मूर्त हम नहीं रहते तो हमारा जीवन तपस्वी न रहकर केवल सोशल वर्कर का रह जाता है। परिणाम स्वरूप सेवा में वो रस, सफलता, अलौकिकता, दिव्यता नहीं रहती। वो जो आध्यात्मिकता का बल है, जिसको बाबा योग का जौहर कहते हैं, वो नहीं रहता। ये तीनों चीज़ें साथ साथ रहनी चाहिए - त्याग, तपस्या और सेवा।

हम आमतौर पर कहते हैं कि त्याग, तपस्या और सेवा। केवल सेवा नहीं; ज्ञान, योग, दैवीगुणों की धारणा और सेवा- ये हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सब्जेक्ट्स हैं। हम क्या पढ़ाई करते हैं, हमें क्या-क्या पढ़ाया जाता है, यह बात अलग है। जीवन को महान बनाने के पुरूषार्थ की बात जब चलती है, तो उसमें एक बात पर मैं सबका ध्यान खिंचवाना चाहता हूँ, वो यह कि केवल सेवा नहीं, त्याग, तपस्या और सेवा। अगर केवल हम सेवा में ही लग जाते हैं, त्याग की भावन हमारे में नहीं रहती और तपस्वीमूर्त हम नहीं रहते, तो हमारा जीवन तपस्वी का न रहकर, केवल एक सोशल वर्कर (समाजिक कार्यकर्ता) का रह जाता है। इससे सेवा में वो रस, सफलता, अलौकिकता, दिव्यता नहीं रहती। वो जो आध्यात्मिकता का बल है, जिसको बाबा योग का जौहर कहते हैं, वो नहीं रहता। ये तीनों चीज़े साथ-साथ रहनी चाहिए- त्याग, तपस्या और सेवा। मैं समझता हूँ, ये बहुत ही प्रेरणादायक शब्द हैं, इनको सुनकर कोई भी आध्यात्मिक-प्रिय व्यक्ति हो, उसका मन लालायित हो उठता है कि मेरा जीवन ऐसा होना चाहिए।

सेवा करने की सही विधि

जितनी हम सेवा करेंगे, सेवा के साथ-साथ त्याग करेंगे और त्याग के साथ-साथ तपस्या करेंगे तो उतना सेवा में बल आयेगा; जो हम बोलेंगे वह वरदान का रूप हो जायेगा, हमारे नेत्र निहाल करेंगे और बाबा को याद करके वायब्रेशन्स द्वारा उनको आंतरिक सुख देंगे। इसको कहेंगे सेवा का अविनाशी फल। बाबा भी कहते हैं कि योगयुक्त होकर ज्ञान सुनाओ। अगर सिर्फ पंडित बनकर ज्ञान सुनाओगे तो फल नहीं निकलेगा। जब आप स्वयं आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर, बाबा को याद करके अपनी अनन्य स्थिति में होंगे, फिर किसी को बाबा की महिमा सुनायेंगे तो उसको टच होगी। बाबा भी आपकी मदद करेगा। उस आत्मा का कल्याण हो जायेगा। शुरू करने से पहले अपने मन में बाबा से यह बात करो कि बाबा, इसकी भी बुद्धि का ताला खोलो। बाबा, इस आत्मा का भी कल्याण करो। बाबा, आज मेरा यह भाई आया है, यह भी आपसे वर्सा प्राप्त करे। जब आपका मन शुभ-भावना से, शुभ-कामना से द्रवित हो जायेगा तब आप उसी भावना से उस आत्मा को बाबा का परिचय देंगे तो वह आत्मा भी उसी भाव से ज्ञान स्वीकार करेगी। अगर आप ठीक ढंग से, ठीक भाव से नहीं समझायेंगे तो वो आत्मा ज्ञान को ठीक रीति से स्वीकार नहीं कर पायेगी। इस प्रकार, आप उस आत्मा के, उसके जन्म-जन्मान्तर की प्राप्ति से वंचित होने का कारण बनेंगे। ज्ञान देने वालों पर इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी है। बाबा कहते हैं कि हट्ठी तो एक ही, सबको यहाँ आना ही है लेकिन जब आते हैं तब इसी रीति से उनको समझाना हमारा परम कर्त्तव्य है। बाबा के घर में आकर कोई ख़ाली हाथ लौट गया माना यह बहुत नुकसान है। सेवा के साथ त्याग और तपस्या की बात है, इस पर अगर हम पूरा ध्यान देंगे तो मैं समझता हूँ कि बैलेन्स भी ठीक चलता चलेगा और हमारी स्व-उन्नति भी साथ-साथ होती जायेगी।

सही विधि नहीं, तो सेवा में सिद्धि भी नहीं

जब मैं पहली दफ़ा विदेश यात्रा पर जा रहा था। बाबा ने कहा था कि बाहर किसी वक्त सेवा पर जाओ, पहले बाबा के पास बैठ करके, बाबा से बातें करो। सन् 1971 की बात है। वहाँ के सेक्रेट्री जनरल के साथ हमारी मुलाक़ात के लिए समय निर्धारित हुआ था। उस समय बर्मा के एक बुद्धिस्ट सेक्रेट्री जनरल थे। उनके लिए हम सौगात भी लेकर गये थे। तैयार होने में बहनों को देर हो गयी। मैं तो पहले ही तैयार होके खड़ा हो गया था लेकिन किसी को पर्स लेने में देर हो गयी, किसी तो तैयार होने में देर हो गयी। मैं उनके लिए इन्तज़ार करता रहा। विदेशों में टैक्सी बहुत महंगी होती है, हमको करेन्सी भी उस देश की बहुत कम मिली थी इसलिए हम ट्रेन से जाते थे। तैयार होकर चल पड़े। कई मंज़िलो से उतरकर हम नीचे आये तो किसी ने कहा कि अरे, फलानी चीज़ लेनी थी वह भूल गयी। उसको लेने के लिए इतनी मंज़िल फिर ऊपर जाओ। फिर किसी ने कहा, मैं भी फलानी चीज़ भूल गयी। वहाँ के दरवाज़े भी कई तरह के होते हैं। एक-एक मकान में चार-पाँच तरह के ताले होते हैं। कोई जल्दी खुलते हैं, कोई धीरे-धीरे खुलते हैं। फिर भी हम मिलने गये तो काफ़ी समय हो चुका था, हम उनसे मिल नहीं पाये। सेक्रेट्री जनरल के बजाय उसका एक प्रमुख था, उससे मिले और सौगात आदि देकर आये। अगले दिन गुरूवार था, हमारे साथ एक सन्देशी भी थी, जब भोग लगा तो बाबा ने सन्देश भेजा कि बच्चे, आपने मेरी आज्ञा की पालना नहीं की। बाबा बापको मदद करता लेकिन आपने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया। बाबा को याद करके बाहर सेवा के लिए जाना था लेकिन समय को बचाने के लिए उस नियम का उल्लंघन करके ऐसे ही चले गये। आपने बाबा की याद में बैठना महत्व का कार्य नहीं समझा, उसको छोड़कर दूसरे कामों को महत्व दिया। कंघी लगाने में दो मिनट ज़्यादा समय लगा दिया, किसी ने शीशे में अपना चेहरा देखने में समय ज़रूरत से ज़्यादा भी लगा दिया होगा। जिससे मिलने गये थे, उससे ही नहीं मिल पाये। पहले से ही बाबा ने कहकर भेजा था, पहले ही वॉर्निंग (चेतावनी) देकर भेजा था कि बच्चे, जब सेवा पर जाना, याद में बैठकर जाना। इतनी महत्वपूर्ण सेवा में जा रहे हो। लेकिन बाबा की इस बात की उपेक्षा की, तो बाबा कहेगा, कर लो, देख लो परिणाम। उसका क्या नतीजा हुआ? अपने लक्ष्य को खो दिया।

नई दिल्ली। ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा, भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, ब्र.कु. प्रकाश,माउंट आबू तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

नई दिल्ली। प्रताप चन्द्र सारंगी,केन्द्रीय राज्यमंत्री,एनिमल हस्बेंडरी, डेरिंग एंड फिशरीज़ एंड माइक्रो, स्मॉल एंड मीडियम इन्टरप्राइज़ेज़ को माउण्ट आबू में होने वाले ग्लोबल सम्मिट कम एक्सपो में आने का निमंत्रण देते हुए राजयोगी ब्र.कु. मृत्यंजय। साथ हैं ब्र.कु. शिविका तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहन।

पी.यू.आर.सी.-ब्रह्मापुर(ओडिशा)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में उप प्रभागीय न्यायिक मजिस्ट्रेट सरोजिनी साहू, निस्ट इंजीनियरिंग कॉलेज के लेक्चरार डॉ. राजेन्द्र कुमार, अवसर प्राप्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सुधांशु नायक, नेत्र विशेषज्ञ डॉ. नागेश्वर पात्र, मधुमेह विशेषज्ञ डॉ.पी.सी. पात्र, ब्र.कु. कृष्णा, ब्र.कु. माला, ब्र.कु. मंजू तथा अन्य।

नेपाल-राजबिराज। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए पूर्व मंत्री मृगेन्द्र सिंह यादव, मेयर शम्भू प्रसाद यादव, एस.पी. मनोज कुमार यादव, वार्ड अध्यक्ष जयनारायण मंडल, नगर के प्रशासकीय अधिकृत श्याम कुमार सिंह, सागरमाथा पेट्रोलियम डीलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष हरी प्रसाद सिंह तथा ब्र.कु. भगवती।

आस्का-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. लिलि, विधायिका मंजुला स्वाई तथा अन्य।

महम-हरियाणा। विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण करने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. उर्मिला,माउण्ट आबू, ब्र.कु. चेतना, ब्र.कु. सुमन, तेल रिफाइनरी और कॉटन मिल के मालिक विजय मित्तल तथा श्रीराम सीनियर सेकेण्डरी स्कूल की प्रिन्सीपल कनिका गिरधर।